SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-2 April - June 2026 E-ISSN: 2584-2900

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला : सांस्कृतिक समन्वय और वास्तुशिल्पीय उपलब्धियों का अध्ययन

आलोक कुमार पाण्डेय

सह-प्राध्यापक

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार

किसी भी समाज की संस्कृति के मनोभावों एवं दृष्टिकोण को प्रदर्शित करने का सर्वोत्तम माध्यम कला एवं वास्तुकला है. वास्तुकला से समकालीन समाज के विचारों और दृष्टिकोणों को दृष्टिगत अभिव्यक्ति प्राप्त होती है तुर्की शासन की स्थापना ने सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था के विकास में योगदान के साथ-साथ कला के क्षेत्र में भी नई अभिव्यक्तियों को जन्म दिया वास्तुकला की. जो शैली सल्तनत काल में विकसित हुई वह 'हिन्दू-इस्लामी शैली कही जाती है कुछ विद्वान् इसे इण्डोसारसेनिक शैली' कहते हैं फर्ग्यूसन महोदय ने इसे पठान शैली कहा है किन्तु यह वास्तव में भारतीय इस्लामी शैलियों का मिश्रण थी तुर्क एवं अफगान शासकों ने अपनी आवश्यकता एवं रुचि के अनुसार विशाल सुन्दर भवनों, किलों मकबरों, मस्जिदों एवं मीनारी आदि का निर्माण कराया।

बीज शब्द

स्थापत्य कला, हिन्दू-इस्लामी शैली, मामलूक कालीन स्थापत्यकला, अवरोही टोडा' तकनीक, अढ़ाई दिन का झोपड़ा, हजारसितून, आदिलाबाद, अठपहला।

शोध विस्तार

सल्तनतकालीन स्थापत्यकला का क्रमिक रूप से विकास हुआ। सल्तनतकालीन स्थापत्यकला के विकास को मुख्यतः चार भागों में बाँटा जा सकता है-

मामलूक कालीन स्थापत्यकला

दिल्ली में किला राय पिथौरा के समीप कुतुबुद्दीन ऐबक ने कुब्बल-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण करवाया यह भारत में निर्मित होने वाली पहली तुर्की मस्जिद थी। यह एक मन्दिर के चबूतरे पर मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा गिराए गए 27 हिन्दू और जैन मन्दिरों की सामग्री से बनाई गई थी। इण्डो-इस्लामिक शैली में निर्मित स्थापत्य कला का पहला ऐसा उदाहरण है जिसमें स्पष्ट हिन्दू प्रभाव दर्शाया गया है। मस्जिद में लगी जाली, स्तम्भ एवं दरवाजे मन्दिरों के अवशेष थे। कुतुबुद्दीन ऐबक के काल में दिल्ली में निर्मित दूसरी इमारत कुतुबमीनार है। प्रारम्भ में इसका प्रयोग अजान देने (नवाज के लिए बुलाने) के लिए किया गया था, किन्तु वास्तविक उद्देश्य तुर्की विजय स्तम्भ स्थापित करना था। इसमें भारतीय इस्लामी स्थापत्य की विशेषता दृढ़ता और सौन्दर्य का सम्मिश्रण बखूबी प्रयोग किया गया है। लाल बलुआ पत्थर से निर्मित इस मीनार के छज्जों का निर्माण 'अवरोही टोडा' तकनीक से किया गया है। 1206 ई में कुतुबुद्दीन ऐबक इस इमारत में बारह मंजिलों का निर्माण कराना चाहता था, परन्तु एक मंजिल के निर्माण के बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। शेष मंजिल को बाद में 1231 ई में इल्तुतमिश ने पूरा करवाया। आँधी में इसकी चौथी मंजिल को काफी नुकसान पहुंचा था। लेकिन फिरोज तुगलक ने इसकी चौथी मंजिल के स्थान पर दो और मंजिल बनवाकर इसकी ऊँचाई 240 फीट तक बढ़ा दी कुतुबुद्दीन ऐबक ने अढ़ाई दिन का झोपड़ा, जो वास्तव में एक मस्जिद है, का निर्माण अजमेर में करवाया। यह पहले एक संस्कृत विद्यालय और मन्दिर था जिसे सुप्रसिद्ध सम्राट् विग्रहराज बीसलदेव ने निर्मित करवाया था। बीसलदेव द्वारा रचित हरिकेलि नामक नाटक तथा सोमदेव कृत्त ललित विग्रहराज की कुछ पंक्तियाँ आज भी इसकी दीवारों पर मौजूद हैं। शैली और रचना में अढ़ाई दिन का झोपड़ा कुव्वल-उल-इस्लाम मस्जिद से मिलता-जुलता है। अढ़ाई दिन का झोपड़ा भी गिराए गए हिन्दू मन्दिरों की सामग्री से निर्मित है इस मस्जिद के आकार में बाद में इल्तुतमिश ने विस्तार किया।[1]

नासिरुद्दीन महमूद का मकबरा या सुल्तानगढ़ी का मकबरा इल्तुतमिश के ज्येष्ठ पुत्र नासिरुद्दीन महमूद का है जिसे सुल्तानगढ़ी भी कहते हैं। इसे इल्तुतमिश ने 1231-32 ई में निर्मित करवाया था। चूंकि तुर्क सुल्तानों द्वारा भारत में निर्मित यह पहला मकबरा था इसलिए

इल्तुतमिश को मकबरा निर्माण शैली का जन्मदाता भी कहा जाता है। "यह इमारत लगभग पूर्णतया हिंदू है और इसके खम्भों के शिरोभागों व उनके ऊपर के भागों (Architraves), अधिकांश सजावट-योजनाएं शुद्ध हिन्दू है। यद्यपि मेहराबे और गुम्बद इसकी बनावट में प्रमुखता लिए हुए है. लेकिन इस काल की अन्य सभी मेहराबों और गुम्बदों की तरह हिन्दू कारबेल (Corbel) सिद्धान्त पर निर्मित किए गए है"[2]

इल्तुतमिश के मकबरे का निर्माण 1235 ई में इल्तुतमिश द्वारा कुब्बल-उल-इस्लाम मस्जिद के समीप किया गया। इल्तुतमिश के इस मकबरे को सल्तनत काल के प्रारम्भ की बहुत ही सुन्दर सजावटपूर्ण इमारतों में गिना जाता है। इसकी दीवारों के भीतरी भाग पर सुन्दर कुरानी अभिलेख, फूल-पत्तियों की बेले (Floral Arabesques) और विभिन्न प्रकार की ज्यामिति की आकृतियों की डिजाइनों (Geometric Patterns) की बड़ी घनी खुदाई है। इल्तुतमिश ने और इमारते मी बनवाई थीं इनमें हौज शगसी, शमसी ईदगाह, बदायूँ की जामा मस्जिद और जोधपुर राज्य के नागौर में अतारकिन दरवाजा प्रमुख है। मुगल सम्राट् अकबर ने इसी अतारकिन दरवाजे से प्रेरित होकर बुलंद दरवाजे का निर्माण करवाया था।[3]

खिलज़ी कालीन वास्तुकला

अलाउद्दीन खिलजी के सिंहासनारोहण से दिल्ली की हिन्दू मुस्लिम शैली में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। अलाउद्दीन खिलजी साम्राज्य निर्माता होने के साथसाथ निर्माण के क्षेत्र भी बड़ा महत्वाकांक्षी था। अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में कुव्वल-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार पर 'अलाई दरवाजे का निर्माण करवाया। मार्शल ने अलाई दरवाजे' को 'इस्लामी स्थापत्य कला का हीरा' कहा है। यह 1310-11 ई में बनकर पूरा हुआ। इसके चारों दीवारों में एक मेहराबदार दरवाजा है। अलाई दरवाजा की साज-सज्जा में बौद्ध तत्वों के मिश्रण का आभास होता है। अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के समीप जमात खाना मस्जिद का निर्माण करवाया पूर्णत इस्लामी शैली में निर्मित इस मस्जिद में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है। भारत में पूर्ण रूप से मुसलमानी आदर्श पर निर्मित मस्जिदों में यह सबसे पहली मस्जिद मानी जाती है।

अलाउद्दीन खिलजी ने सीरी नगर भी 1303 ई. में बसाया था। यह दिल्ली के नगरों में द्वितीय था। अलाउद्दीन ने हजारसितून (हजार खम्भों वाला) नामक महल यहीं पर बनवाया था। यह महल अब पूर्णतया नष्ट हो गया है और सीरी नगर भी खण्डहर अवस्था में है, लेकिन अपने गोलाई लिए हुए ढलुवाँ बुजर्गों,दीवार में मोर की पंखों की कतारों और अग्निशिखा जैसे कंगूरों की फॉकदार दीवारों और मेहराबदार गैलरी पर सीधी खाई के ऊपर या थोडा अवशेष की भीतरी टाँडो सहित अलाई या हौज खास नामक एक बड़ा तालाब भी खुदवाया था, जो लगभग 700 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ था अमीर खुसरो ने इसके बारे में लिखा है कि "पानी के बीच ये गुम्बद समुद्र की सतह पर बुलबुले के समान है।"[4]

तुगलककालीन वास्तुकला के आदर्श एवं शैली, दोनों में ही परिवर्तन आया। तुगलक वंशी शासकों ने खिलजीकालीन इमारतों की भव्यता एवं सुन्दरता के स्थान पर इमारतों की सादगी एव मितव्यता पर अधिक जोर दिया। गयासुद्दीन तुगलक और उसके उत्तराधिकारी स्वाभाविक रूप से पुरानी शुद्ध इस्लामी स्थापत्यकला शैली को पसन्द करते थे। फिर तुगलकों की आर्थिक दशा खिलजियों से खराब थी और उनके पास अपनी निर्माण योजनाओं पर फिजूलखर्ची करने के लिए फालतू धन ही नहीं था। जॉन मार्शल के अनुसार मुहम्मद तुगलक दिल्ली को लगभग उजाड़ कर वहाँ की आबादी को बरबस दौलताबाद ले गया था तथा वहाँ से कुशल कारीगरों का अभाव हो गया था। इसके परिणामस्वरूप ही तुगलकों की इमारतें खिलजियों की तुलना में कम शानदार और कम कलात्मक लगती है। गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप पहाड़ियों पर तुगलकाबाद नामक नगर बसाया था। यहाँ स्थित एक किले का निर्माण रोमन कला शैली में किया गया है। इस किले को 'छप्पन कोट' नाम से जाना जाता है। इसके अन्दर बड़ा-सा महल था। इब्नबतूता से हमें यह जानकारी प्राप्त होती है कि गयासुद्दीन का बड़ा महल "सुनहरी ईंटों से बना था तथा जब सूर्योदय होता था, तो वह इतनी तेजी से चमकता था कि किसी की भी उस पर आँख नहीं ठहरती थी।" तुगलकाबाद किले की दीवारें मिस के पिरामिड की तरह अन्दर की ओर झुकी हुई है। इसकी नींव गहरी तथा दीवारे मोटी है जॉन मार्शल का कहना है कि इसका निर्माण निम्न कोटि का है। सम्भवत मगोलों के आक्रमण के भय से इसका निर्माण इतनी शीघ्रता से किया गया है कि इसमें विशिष्ट कला शैली का अभाव सर्वत्र दिखाई देता है।[5]

गयासुद्दीन तुगलक के मकबरा का निर्माण कृत्रिम झील के अन्दर निर्मित इस मकबरे की दीवारें मिस्र के पिरामिड की भाँति अन्दर की ओर झुकी हुई है। यह मकबरा पंचभुजीय छोटीसी गढ़ी जैसा है। यह लाल पत्थर का बना है और इसकी मेहराबों के ऊपर संगमरमर की पट्टियाँ जड़ी हुई हैं। इस मकबरे का पूरा विशाल गुम्बद संगमरमर का है मार्शल के शब्दों में इस मकबरे की दृढ़ता तथा सादगी के आधार पर हम कह सकते हैं कि उस महान योद्धा की समाधि के लिए इससे उपयुक्त स्थान नहीं हो सकता था। मुहम्मद तुगलक ने भी कई इमारतें बनवाई थीं। उसने तुगलकाबाद नामक नगर के पास 'आदिलाबाद' नामक छोटे से किले की नींव डाली थी और पहली दो दिल्लियों को मिलाकर एक बहुत ही मोटी दीवार से 'जहाँपनाह' नामक चौथी दिल्ली बसाई थी, लेकिन ये सभी बड़ी ही मामूली सामग्री से बनाए गए प्रतीत होते हैं, क्योंकि अब इनमें से सभी गायब हो चुके हैं। मुहम्मद तुगलक के पश्चात् फिरोज तुगलक सुल्तान बना वह एक बड़ा निर्माता था। उसने बहुत सी सार्वजनिक इमारतें जैसे शहर, किले, मस्जिदें, नहरें और मकबरे बनवाए। उसने फिरोजाबाद नाम से पाँचवीं दिल्ली बसाई थी, जोकि उत्तरी पहाड़ी भाग और दक्षिण में हौज खास के बीच स्थित है। इस नगर में उसने एक महली किला बनवाया था, जो कोटला फिरोजशाह के नाम से विख्यात है। दुर्ग के अन्दर इमारतों में जन सामान्य के लिए आठ मस्जिदें एवं व्यक्तिगत प्रयोग के लिए एक मस्जिद उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त दुर्ग के अन्दर तीन राजमहल एवं अनेक शिकार खेलने के स्थानों का निर्माण (शिकारगाह) किया गया था। दुर्ग के अन्दर निर्मित जामा मस्जिद के सामने मौर्य सम्राट् अशोक का टोपरा व मेरठ से लाया गया स्तम्भ 'दुश्क-ए-शिकार' महल के सामने गडा है। फिरोजशाह की एक दूसरी मुख्य इमारत उसका अपना मकबरा है। यह वर्गाकार है इसके ऊपर केवल एक ही गुम्बद है, जो अठपहला इमारती ढोल पर आधारित है। इस मकबरे की मजबूत दीवारों को फूल पत्तियों एवं बेल-बूटों से सजाया गया है।

निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के दक्षिण में स्थित खानेजहाँ मकबरा तुगलक काल की महत्वपूर्ण इमारत है। इसे उसके पुत्र खानेजहाँ जौनाशाह ने 1370-71 ई में बनवाया था। इस युग के मकबरे वर्गाकार बनाए जाते थे, पर तेलगानी के मकबरे की योजना अठपहला थी। इसके ऊपर

एक ही गुम्बद था और इसके चारों ओर नीचा मेहराबदार बरामदा था। कहा जाता है कि इस मकबरे की डिजाइन जेरूसलम के 'डोम ऑफ दी रॉक' (Dome of the Rock) से ली गई है।[6]

सैयद और लोदी कालीन वास्तु कला

तैमूर के आक्रमण ने दिल्ली सल्तनत पर मृत्यु आधात-सा किया था। दिल्ली के सुल्तान निर्धन और असहाय हो गए थे और इसलिए वे बड़े पैमाने पर इमारतों को निर्माण नहीं करा सके। इस काल के दोनों राजवशों की, जो इमारतें बनी हैं, वे केवल मकबरे हैं। सैयद लोदी काल में अनेकानेक मकबरों का निर्माण हुआ, जिससे इस काल को 4 सी ब्राउन ने 'मकबरों का काल' कहा है। पहली बार बहुत बड़ी संख्या में सल्तनत के अमीरों द्वारा भवन निर्माण कराया गया। इस काल में विकसित हुई वास्तुकला को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रथम प्रकार की वास्तुकला के अनुसार मकबरे अष्टभुजीय बनाए गए, जिनमें मेहराबनुमा बरामदों से घिरा हुआ। मुख्य समाधि कक्ष एवं बरामदे के बाहर निकली हुई 'ओरी' होती, जो आलम्बन लिए टेक पर टिकी हुई थी तथा इनकी ऊँचाई एक मंजिल थी। दूसरे प्रकार की शैली में इमारते वर्गाकार थीं, जिनमें मुख्य समाधि कक्ष के आसपास बरामदे नहीं थे एवं ओरी व समर्थन देने वाले टेक का अभाव था। साथ ही बाहरी भाग की ऊँचाई दो या तीन मंजिल थी। इस काल के भवनों की सजावट के लिए रंगीन 'खपरैल' का प्रयोग किया गया। इस काल के स्थापत्य के प्रमुख उदाहरण दिल्ली की बड़ी गुम्बद मस्जिद, मोठ की मस्जिद, जमाली कमाली मस्जिद प्रमुख हैं। मार्शल के अनुसार, लोदियों की स्थापत्य कला में जो भी सबसे सुन्दर है उसका संक्षिप्त रूप 'मोठ की मस्जिद में विद्यमान है। दिल्ली सल्तनत में शाही भवनों के अतिरिक्त सार्वजनिक भवनों यथा-सराय पुल, तालाब कुएं, बाबड़ी, बाँध, कचहरी कैदखाना, डाक-चौकी, हम्माम और कटरा आदि का निर्माण बडी सख्या में हुआ है। इन भवनों में सर्वाधिक विशिष्ट 'सराय' सर्वप्रथम उल्लेख बलबन के सराय का है सरायों के अतिरिक्त पुल, बाँध व सीडीदार कुए सल्तनतकालीन वास्तुकला का प्रमुख भाग है। सल्तनतकाल के दो पुल वर्तमान में भी अस्तित्व में है। प्रथम गंभीरी नदी चित्तौडगढ़ में दूसरा साहिबी नदी पर बजीराबाद (दिल्ली) में सीढ़ीदार कुएं का उदाहरण है। इल्तुतमिश द्वारा निर्मित बावड़ी महरौली है।[7]

निष्कर्ष

सल्तनतकालीन स्थापत्य एवं कला का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि इस काल में शासकों द्वारा कलात्मक अभिरुचियों को संरक्षण प्रदान किया गया तथा सार्वजनिक निर्माण कार्यों को विशेष प्रोत्साहन मिला। यद्यपि उस समय निर्मित अनेक नगर, किले और महल कालांतर में नष्ट हो गए, तथापि मकबरे, मस्जिदें तथा मीनारें आज भी उस युग की स्थापत्य-कौशल एवं सांस्कृतिक चेतना के सशक्त प्रमाण के रूप में विद्यमान हैं। ये निर्माण न केवल तत्कालीन कला और वास्तुकला की विशेषताओं को प्रतिबिंबित करते हैं, बल्कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण धरोहर के रूप में भी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

संदर्भ

1. शर्मा, एल. पी. (2018). मध्यकालीन भारत. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
2. सक्सेना, आर. के. (1986). दिल्ली सल्तनत (1200-1526 ई.) पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
3. सिंह, उपेन्द्र. (2021). भारत का इतिहास एवं संस्कृति. पियर्सन इंडिया एजुकेशन सर्विसेज, नई दिल्ली।
4. श्रीवास्तव, आशीर्वादी लाल. (2017). दिल्ली सल्तनत, शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी प्रा. लि. प्रयागराज।
5. चन्द्र, सतीश. (2020). मध्यकालीन भारत: सल्तनत से मुगल काल तक, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली।
6. नाथ, राम. (1978). History of Sultanate Architecture, अभिनव पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
7. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय. (2017). दिल्ली सल्तनत की कला एवं वास्तुकला, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।